किं किम् उपादेयम्

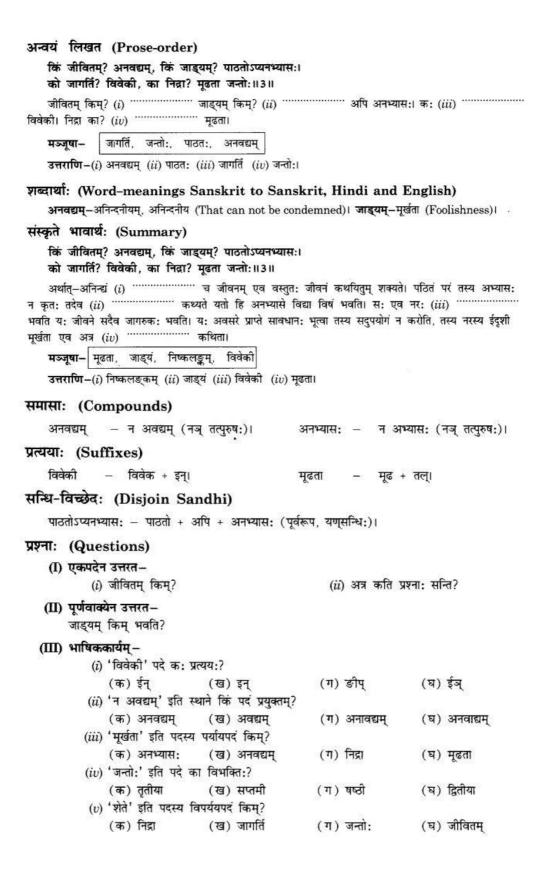
1. भगवन्किमुपादेयम्? गुरुवचनम्, हेयमपि च किम्? अकार्यम्। को गुरु:? अधिगततत्त्वः शिष्यहितायोद्यतः सततम् ॥१॥ हिंदी अनुवाद (Hindi Translation) भगवन! ग्रहण करने योग्य क्या है? गुरु के वचन। त्यागने योग्य क्या है? बुरा कार्य। गुरु कौन है? तत्त्वों को जानने वाला तथा निरन्तर शिष्यहित में तैयार रहने वाला। अन्वयं कुरुत (Prose-order) भगवन्किमुपावेयम्? गुरुवचनम्, हेयमपि च किम्? अकार्यम्। को गुरुः? अधिगततत्त्वः शिष्यहितायोद्यतः सततम्॥1॥ कः? सततम् शिष्यहिताय (iv) अधिगततत्त्वः। मञ्जूषा- हेयम्. उद्यतः, गुरुः, उपादेयम् उत्तराणि-(i) उपादेयम् (ii) हेयम् (iii) गुरु: (iv) उद्यत:। शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English) उपादेयम् – ग्राह्यम् , ग्रहण करने योग्य (Acceptable)। हेयम् – त्याज्यम् , त्यागने योग्य (Disposable)। सततम् – निरन्तरम् . लगातार (Perpetual)। अधिगततत्त्व:-तत्त्वानां ज्ञातार:, तत्त्वों को जानने वाला (Learned)। संस्कृते भावार्थ: (Summary) भगवन्किमुपादेयम्? गुरुवचनम्, हेयमपि च किम्? अकार्यम्। को गुरु:? अधिगततत्त्वः शिष्यहितायोद्यतः सततम्॥1॥ हे भगवन् अस्मिन् लोके (i) किम् अस्ति? उत्तरम् अस्ति-गुरुणाम् वचनम्। एवमेव (ii) किम्? उत्तरम् अस्ति-दुष्कार्यम्। गुरु: क: कथ्यते? य: (iii) स्वशिष्याणाम् कल्याणाय (iv) भवति, येन च यथार्थज्ञानम् प्राप्तम् भवति। मञ्जूषा- तत्पर:, ग्राह्यम्, निरन्तरम्, त्याज्यम् उत्तराणि-(i) ग्राह्यम् (ii) त्याज्यम् (iii) निरन्तरम् (iv) तत्पर:। समासाः (Compounds) शिष्यहिताय - शिष्याणाम् हिताय (षष्ठी तत्पुरुष:)। गुरुवचनम् - गुरो: वचनम् (षष्ठी तत्पुरुष:)। – न कार्यम् (नञ् तत्पुरुषः)। अधिगततत्त्व: - अधिगतम् तत्त्वं येन स: (बहुव्रीहि:) सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi) हितायोद्यत: - हिताय + उद्यत: (गुणसन्धि:)। को गुरु: - क: + गुरु: (उत्व विसर्ग)। प्रत्ययाः (Suffixes) भगवन् - भग + मतुप्। हेयम हा + यत्।

| प्रश्नाः (Questions) | | |
|--|--|-----|
| (I) एकपदेन उत्तरत- | | |
| (i) हेयम् किम्? | (ü) अत्र किम् सम्बोधनपदम्? | |
| (II) पूर्णवाक्येन उत्तरत– | | |
| (i) उपादेयम् किम् भवति? | (ii) गुरु: क: कथ्यते? | |
| (III) भाषिककार्यम् – | | |
| (i) 'निरन्तरम्' इत्यस्य शब्दस्य अर्थे श्लोके कि | पदं प्रयुक्तम्? | |
| (क) सततम् (ख) अकार्यम् | (ग) उद्यत: (घ) हेयम् | |
| (ii) 'तत्पर:' इति पदस्य अत्र पर्याय प्रयुक्तम्? | | |
| (क) अधिगततत्त्व: (ख) अधिगत: | (ग) हेयम् (घ) उद्यत: | |
| (iii) 'उपादेयम्' इति पदस्य विलोमपद अत्र किम्? | | |
| (क) सततम् (ख) हेयम् | (ग) अकार्यम् (घ) तत्त्व: | |
| (iv) 'शिष्यहितायोद्यत:' इति पदस्य सन्धिवच्छेदं वृ(क) शिष्यहिता + ओद्यत: | | |
| (क) शिष्यहिता + अद्यत: (ग) शिष्यहिताय + उद्यत: | (ख) शिष्यहितायो + द्यत: (घ) शिष्यहिताय + ओद्यत: | |
| | (प) सिमारताप । जावतः | |
| उत्तराणि (I) (i) अकार्यम् (ii) भगवन्। | स्त यः अधिगततत्वः शिष्यहिताय च सततम् उद्यतः अस्ति | |
| (III) (i) (क) सततम् (ii) (घ) उद्यतः (iii) (| | |
| प्रश्ननिर्माणम् (i) गुरुवचनम् उपादेयं भवति। | (ii) अकार्यं हेयम् अस्ति। | |
| | (iv) यः तत्त्वान् जानाति सः गुरुः अस्ति। | |
| उत्तराणि —(i) किम् (ii) कीदृशम् (iii) केषाम् (iv) व | 경제하다의 : :::::::::::::::::::::::::::::::::: | |
| उत्तराज-(६) विन्यू (६६) वर्गपुरान् (६६) वर्गान् (६६) व | 7 | |
| 2. कः पथ्यतरः? धर्मः, कः शुचिरिह? यस्य मानसं | ं शुद्धम्। | |
| कः पण्डितः? विवेकी, किं विषम्? अवधीरणा | गुरुषु ॥ २ ॥ | |
| हिंदी अनुवाद (Hindi Translation) | | |
| अधिक कल्याणकारी क्या है? धर्म। इस संसार में पवित्र कौन है? | जिसका मन शुद्ध है। पण्डित कौन है? विवेकवान्। वि | ष |
| क्या है? गुरुओं की अवहेलना। | Secure Control | |
| अन्वयं लिखत (Prose-order) | | |
| कः पथ्यतरः? धर्मः, कः शुचिरिह? यस्य मानसं शुद्धम्। | | |
| कः पण्डितः? विवेकी, किं विषम्? अवधीरणा गुरुषु॥2 | in . | |
| पथ्यतर कः? (i) इह शुचि: कः? | यस्य (ii) शुद्धम्। पण्डित: क | :? |
| (iii) विषम् किम्? (iv) अन | वधीरणा। | |
| मञ्जूषा— मानसं, गुरुषु, धर्म:, विवेकी | | |
| उत्तराणि –(i) धर्म: (ii) मानसं (iii) विवेकी (iv) गुरुषु। | | |
| शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sans | skrit, Hindi and English) | |
| इह – अस्मिन् संसारे, इस संसार में (In this world)। शुचि:-प | | ान |
| (Insult)। पथ्यतर:-कल्याणकर:, कल्याणकारी (Wealthful)। | पण्डित:-विद्वान, विद्यावाला (Intelligent)। | 197 |
| (Landers, 1 - 1111 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 | N. Carrier M. Carrier | |

| संस्कृते भावार्थः (Summary) | | |
|---|---|---|
| कः पथ्यतरः? धर्मः, कः शुचिरिह? यस्य मानसं | शद्धम्। | |
| कः पण्डितः? विवेकी, किं विषम्? अवधीरणा | 1.00 | |
| अस्मिन् संसारे (i) एव पथ्यतर: अस्ति पवित्र: भवति। य: सर्वाणि कार्याणि विचार्य करोति (iv) इव जनान् नाशयति। मञ्जूषा– विवेकी, विषम्, धर्मः, शुद्धम् | । यस्य मन: पवित्रं निर्मलं (i स: पण्डित: (iii) | ii) चास्ति सः एव भवति। गुरुणाम् तिरस्कारम् |
| उत्तराणि –(i) धर्म: (ii) शुद्धम् (iii) विवेकी | (iv) विषम्। | |
| सन्धि-विच्छेद: (Disjoin Sandhi) | | |
| शुचिरिह - शुचि: + इह (विसर्गसन्धि:)। | | |
| प्रत्ययाः (Suffixes) | | 34 |
| विवेकी – विवेक + इन्। | पथ्यतर: - पथ्य + | तरप्। |
| प्रश्ना: (Questions) | | |
| (I) एकपदेन उत्तरत- | | |
| (i) पण्डित: क:? | (ü) गुरुषु अवधीर | णा किम्? |
| (II) पूर्णवाक्येन उत्तरत– | | |
| शुचि: क: भवति? | | |
| (III) भाषिककार्यम्— | | |
| (i) 'शुचिरिह' अत्र सन्धि-विच्छेदं कुरुत। | | |
| (क) शुचिर् + इह (ख) शुचि: + | इह (ग) शुचि + रिह | (घ) शुचिरि + ह |
| (ii) 'शुद्धम् मानसम्' इति अनयो: पदयो: | विशेष्यपदं किम्? | |
| (क) मानसम् (ख) मानस | (ग) शुद्ध | (घ) शुद्धम् |
| (iii) 'विवेकी' इति पदे कः प्रत्ययः? | | |
| (क) इन् (ख) ईङ् | (ग) ईन् | (घ) इञ् |
| (iv) अस्मिन् श्लोके अव्ययपदम् किम्? | 13 84 0712/02/07 | |
| (क) धर्मः (ख) किम् | (ग) शुचिरिह | (घ) इह |
| उत्तराणि — (I) (i) विवेकी।(ii) विषम्। | | |
| (II) (i) यस्य मानसं शुद्धं सः शुचिः भवति। | | |
| (III) (i) (ख) शुचि: + इह (ii) (क) मा | | |
| प्रञ्ननिर्माणम् – (i) धर्मः पथ्यतरः भवति। | (ii) शुचे : मानसं | A-T-9 |
| (iii) विवेकी पण्डितः भवति। | (iv) गुरुषु अपमानं | विषम् वर्तते। |
| (v) गुरुणाम् अवधीरणा विषमिव घ | ग्रातक: वर्तते। | |
| उत्तराणि-(i) क: (ii) कस्य (iii) क: (iv) किम् | (v) केषाम्। | |
| किं जीवितम्? अनवद्यम्, किं जाड्यम्: को जागर्ति? विवेकी, का निद्रा? मूढता | 2 | |

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

जीवन क्या है? कलंकरिहत। मूर्खता क्या है? पढ़ते हुए भी अभ्यास न करना। जागता कौन है? विवेकवान्। निद्रा क्या है? प्राणी को मूर्खता।



```
उत्तराणि- (I) (i) अनवद्यम् (ii) चत्वार:।
         (II) पाठतोऽप्यनभ्यास: जाड्यम् भवति।
         (III) (i) (ख) इन् (ii) (क) अनवद्यम् (iii) (घ) मूढता (iv) (ग) षष्ठी (v) (ख) जागर्ति।
प्रश्निर्माणम् (i) जन्तोः मूढता निद्रा भवति।
                                                  (ii) पठनस्य अनभ्यासः एव जाड्यम् अस्ति।
              (iii) विवेकी एव सदैव जागर्ति।
                                                 (iv) अनिन्दितः एव सदा जीवति।
               (v) सदैव पठितस्य अभ्यासः कर्तव्यः।
उत्तराणि-(i) कस्य (ii) किम् (iii) क: (iv) क:/कीदृश: (v) क:।

 निलनीदलगतजलवत्तरलं किम्? यौवनं धनं चायु:।

    कथय पुनः के शशिनः किरणसमाः? सज्जना एव॥४॥
हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)
कमिलनी के पत्ते पर पड़े हुए जल के समान चंचल क्या है? यौवन, धन और आयु। फिर बताओ चन्द्रमा की किरणों के
समान (शीतल) कौन है? सज्जन ही।
अन्वयं लिखत (Prose-order)
   निलनीदलगतजलवत्तरलं किम्? यौवनं धनं चायु:।
   कथय पुनः के शशिनः किरणसमाः? सञ्जना एव ॥४॥
   निलनीदलगत (i) ...... तरलम् किम्? यौवनम्. (ii) ...... आयु: च? पुन: कथय,
मञ्जूषा- धनम्, सज्जनाः, जलवत्, शशिनः
   उत्तराणि-(i) जलवत् (ii) धनम् (iii) शशिनः (iv) सज्जनाः।
शब्दार्था: (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)
निलनीदलगतजलवत्-निलन्या: दले गतं जलवत्, कमिलनी के पत्ते पर पड़े जलबिन्दु के समान (Like the drops of water
resting on the leaves of a lotus plant)। शशिन: चन्द्रस्य, चन्द्रमा के (of Moon)
संस्कृते भावार्थः (Summary)
   निलनीदलगतजलवत्तरलं किम्? यौवनं धनं चायुः।
    कथय पुनः के शशिनः किरणसमाः? सज्जना एव॥४॥
अस्य भाव: अस्ति यत्-अस्मिन् संसारे यौवनम् धनम् आयु: च कमलिन्या: पत्रे पतितं जलम् इव (i) ...... भवन्ति।
अर्थात् यथा कमलपत्रपतितम् जलकणानि क्षणभङ्गराणि अस्थिराणि च भवन्ति तथैव मनुष्यस्य युवावस्था तेन अर्जितं धनम् तस्य
उत्तरम् अस्ति-नूनमेव सञ्जनाः। अर्थात् यथा चन्द्रस्य (iii) मनुष्येभ्यः शीतलताम् प्रयच्छन्ति तथैव
(iv) ..... सम्पर्के अपि मनुष्य: शीतलताम् आप्नोति।
    मञ्जूषा - शशिन:, सज्जनानाम्, चञ्चलानि, किरणाः
    उत्तराणि-(i) चञ्चलानि (ii) शशिन: (iii) किरणा: (iv) सज्जनानाम्
समासाः (Compounds)
    किरणसमाः – किरणैः समाः (तृतीया तत्पुरुषः)। सज्जनाः – सतः च ते जनाः (कर्मधारयः)।
सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

    सत् + जनाः (श्चुत्व, जशत्व सन्धिः)।

             – च + आयु: (दीर्घसन्धि:)।
                                              सज्जना:
प्रत्ययाः (Suffixes)
                                              शशिन:
                                                       — शश + इन्।
             गम् + क्ता
प्रश्नाः (Questions)
    (I) एकपदेन उत्तरत-
           (i) सज्जना: कीदृशा: भवन्ति?
                                                   (ii) के शशिन: किरण समा:?
   (II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–
        निलनीदलगतजलवत्तरलं किम्?
   (III) भाषिककार्यम् -
           (i) 'कथय' पदे क: लकार:?
                                                  (ग) लृट लकार: (घ) विधिलिङ्ग लकार:
              (क) लङ् लकार: (ख) लोट् लकार:
           (ii) 'आयु:' इति पदम् कस्मिन् लिङ्गे अस्ति?
                                                                 (घ) किञ्चिदपि न
                               (ख) स्त्रीलिङ्गे
                                                  (ग) नपुंसकलिङ्गे
              (क) पुल्लिङ्गे
          (iii) 'शशिन:' पदे का विभक्ति:?
                               (ख) चतुर्थी
                                                  (ग) सप्तमी
                                                                   (घ) षष्ठी
               (क) तृतीया
```

```
(vi) 'दलम्' इति पदस्य अर्थम् प्रसंगानुसारम् अस्ति—
                                               (ग) समूहो
                              (ख) समूह:
                                                                 (घ) इत:
              (क) पत्रम्
उत्तराणि- (I) (i) शशिकिरणसमा:।
              (ii) सज्जना:।
          (II) निलनीदलगतजलवत्तरलम् यौवनं धनम् आयु: च सन्ति।
         (III) (i) (ख) लोट्लकार: (ii) (ग) नपुंसकलिङ्गे (iii) (घ) षष्ठी (iv) (क) पत्रम्।
प्रश्निर्माणम् – (i) सज्जनाः शशिकिरणसमाः भवन्ति।
                                                        (ii) शशिन: किरणा: शीतला: भवन्ति।
                                                        (iv) जलं चञ्चल भवति।
               (iii) यौवनं तरलं भवति।
               (v) निलनीदलम् कमिलन्याः पत्रं कथ्यते।
उत्तराणि-(i) कीदृशा: (ii) कीदृशा: (iii) कीदृशम् (iv) किम् (v) कस्या:।
 5. कोऽनर्थफलः? मानः, का सुखदा? साधुजनमैत्री।
    सर्वव्यसनविनाशे को दक्षः? सर्वथा त्यागी॥५॥
हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)
अनर्थकारी फल देने वाला कौन है? अभिमान। सुखदायी कौन है? सज्जनों की मित्रता। सभी बुराइयों का नाश करने में समर्थ
कौन है? सब प्रकार से त्याग करने वाला।
अन्वयं लिखत (Prose-order)
    कोऽनर्थफलः? मानः, का सुखदा? साधुजनमैत्री।
    सर्वव्यसनविनाशे को दक्षः? सर्वथा त्यागी॥5॥
    अनर्थफल: क:? (i) सुखदा का? साधुजन (ii) सर्वव्यसनविनाशे क:
(iii) ...... सर्वथा (iv) .....।
    मञ्जूषा - मैत्री, दक्ष:, त्यागी, मान:
    उत्तराणि-(i) मान: (ii) मैत्री (iii) दक्ष: (iv) त्यागी।
शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)
अनर्थफल:-अनिष्ट:, अनर्थ (One which leads to evil results)। दक्ष:-निपुण:, निपुण (Expert)। मैत्री-मित्रता,
मित्रता (Friendship), साधुजन-सज्जन:, श्रेष्ठ लोग (Intelactual person)।
संस्कृते भावार्थः (Summary)
    कोऽनर्थफलः? मानः, का सुखदा? साधुजनमैत्री।
    सर्वव्यसनविनाशे को दक्षः? सर्वथा त्यागी॥5॥
अस्य भाव: अयम् अस्ति यत्-अभिमान: परिणामे (i) भवति। अत: (ii) अत्र अनर्थफल:
कथित:। साधुजनानां मैत्री सदैव (iii) "भवित। य: मानव: सर्वथा (iv) "भवित स एव सर्वासां
विपदां विनाशं कर्तुं समर्थः भवति।
    मञ्जूषा - त्यागी, अनर्थकर:, सुखदायिनी, मान:
    उत्तराणि-(i) अनर्थकर: (ii) मान: (iii) सुखदायिनी (iv) त्यागी।
समासाः (Compounds)

    सुखम् ददाति इति (उपपद तत्पुरुष:)।

    अनर्थः
            – न अर्थ: (नञ् तत्पुरुष:)।
                                           सुखदा
    साधुजन: - साधु: च असौ जन: (कर्मधारय:)। साधुजनमैत्री

    साधुजनानाम् मैत्री (षष्ठी तत्पुरुष:)।

    अनर्थफलः - अनर्थस्य फलः (षष्ठी तत्पुरुषः)। सर्वव्यवसनविनाशे -सर्वेषाम् व्यसनानाम् विनाशे (कर्मधारयः,
                                                                षष्ठी तत्पुरुष:)।
सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)
    कोऽनर्थफल: - को + अनर्थफल: (पूर्वरूपसन्धि:)।
    को दक्ष: - क: + दक्ष: (विसर्गसन्धि:)।
प्रत्ययाः (Suffixes)
    त्यागी - त्याग + इन्।
                                मैत्री – मित्र + ङीप्।
                                                                   सुखदा
                                                                         – सुखद + टाप्।
प्रश्नाः (Questions)
    (I) एकपदेन उत्तरत-
                                                        (ii) अत्र कति प्रश्ना: सन्ति?
            (i) कोऽनर्थफल:?
   (II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–
       सुखदा का?
```

| (Ш) भाषिककार्य | म्- | | | |
|--|------------------------------------|---|--|---|
| (i) 'त्य | ग्गी'पदेक: प्रत् | यय:? | | |
| (क | इन् | (ख) ईन् | (ग) ङीप् | (घ) ईञ् |
| (ii) 'सुः | खंददाति इति य | । सा' इति स्थाने किं प | इं प्रयुक्तम्? | |
| (क | मुखा | (ख) सुखी | (ग) सुखदा | (घ) सुखदं |
| (iii) 'त्य | ागी' इति पदे क | : मूलशब्द:? | | |
| (क | त्यागः | (ख) त्याग | (ग) त्यागिन् | (घ) त्यागी |
| (<i>iv</i>) अनि | स्मन् श्लोके अव | ययपदं किम्? | | |
| (क | त्यागी | (ख) का | (ग) मैत्री | (घ) सर्वथा |
| उत्तराणि- (I) (i) | मान: (ii) त्रय | :1 | | |
| (II) सुख | दा साधुजन मैत्री | भवति। | | |
| (III) (i) | (क) इन् (ii | i) (ग) सुखदा (iii) | (ख) त्याग (iv) (घ | व) सर्वथा। |
| प्रश्ननिर्माणम् (| i) साधुजनमैत्री र | पुखदा भवति। | (ii) मान : एव अ | नर्थफल: अस्ति। |
| Charles and the control of the contr | i) दक्षस्य अर्थ: | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | 25 CAN TO SEE THE SECTION OF THE SEC | र्वव्यसनविनाशं करोति। |
| (1 | v) अहंकारी जनः | : अहंका रं प्राप्नोति। | | |
| उत्तराणि —(i) कीदृशी | (ii) क: | (iii) कस्य (iv) | क: (v) कम्। | |
| <u> </u> | पार्वन्या वि | हं चानर्घम्? यदवस | रे उसार | |
| | | तः जानवम्ः पदयस् छन्नं यत्कृतं पापम्। | | |
| हिंदी अनुवाद (H | indi Tran | slation) | | |
| मत्य क्या है? मर्खता। | बहमल्य क्या है | ? जो उचित समय पर व | दिया जाए। मत्य तक | काँटे की तरह चुभने वाला क्या है? |
| जो पाप छिपकर किय | 2000 | | | and an are given are e. |
| अन्वयं लिखत (| Prose-orde | er) | | |
| किं मरणम्? मूर | र्वत्वम्, किंचान | र्ग्धम्? यदवसरे दत्तम्। | | |
| आमरणात्कि श | ल्यम्? प्रच्छनं र | यत्कृतं पापम् ॥६॥ | | |
| मरणम किम? (i) | | अनर्धम् च किम्? यत् (| ii) दत्त | म्। आमरणात् (iii) |
| किम्? यत् पापं (iv) | | | | |
| मञ्जूषा- शल्या | | | | |
| A 1975 | | भवसरे (iii) शल्यम् | (iv) प्रच्छनं। | |
| | 1 | Sanskrit to Sa | | nd Fnglish) |
| | | | | |
| 2010 (0.04) (1.74) (1.74) | | ious)। शल्यम्–कण्टक र (In time)। आमरणा | | मरणम्-मृत्यु:, मृत्यु (Death), क (Till death)। |
| संस्कृते भावार्थः | (Summary) |) | | |
| किं मरणम्? मूर | र्बत्वम्, किं चाः | नर्घम्? यदवसरे दत्तम्। | | |
| | | यत्कृतं पापम् ॥६॥ | | # # |
| अस्य भावोऽस्ति | यत्-अस्मिन् जी | वने (i) | ' एव मरणं कथ्यते। य | स्य जन्म भवति तस्य मरणम् अपि |
| निश्चितं भवति। एतत् | तु प्राकृतिक वि | धानम् आस्त। परन्तु य | जनाः मूखतावशात् पद-प | ादे (ii) भवन्ति ते |
| तु जावताः भूत्वा आ | प मृताः एव। एव प्रमाण सान्तनः (| त्रमव यत् यथासमय दाय (iv) इव | त तत् अमूल्यम् बहुमूल्यः : क्राष्ट्रं टटानि। | i वा भवति। (iii) |
| f | | | 1700 | |
| मञ्जूषा – अपमा | | | 71. | |
| उत्तराणि-(i) मूर | बत्वं (ii) अप | ामानिता: (iii) यत्पाप | (१७) शल्यम्। | |
| | | | | |

```
सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)
    किं मरणम् – किम् + मरणम् (अनुस्वार सन्धिः)
                                                        यदवसरे - यत् + अवसरे (व्यंजन सन्धि:)।
                                                        प्रच्छनं - प्र + छनं (तुगागम सन्धिः)।
    चानर्घम् - च + अनर्घम् (दीर्घ सन्धि:)।
प्रत्ययाः (Suffixes)
    मूर्खत्वम् - मूर्ख + त्व।
                                    मरणम् - मृ + ल्युट्।
समासः (Compounds)
     अनर्घम्
                  - न अर्घम् (नञ् तत्पुरुषः)।
प्रश्नाः (Questions)
     (I) एकपदेन उत्तरत-
                                                             (ii) 'शल्यम्' इत्यस्य शब्दस्य क: अर्थ:?
             (i) मरणम् किं भवति?
    (II) पूर्णवाक्येन उत्तरत—
        अनर्घम् किम्?
   (III) भाषिककार्यम् -
             (i) 'प्रच्छन्नम्' इति कस्य पदस्य विशेषणम्?
                                                        (ग) मरणस्य (घ) शल्यस्य
                 (क) पापस्य
                                  (ख) कृतस्य
           (ii) 'मूर्खत्वम्' पदे क: प्रत्यय:?
                                                    (ग) इन्
                                                                        (घ) त्वम्
               (क) त्व
                                (ख) मतुप्
          (iii) 'दत्तम्' इति पदे क: प्रत्यय: वर्तते?
                                                                        (घ) क्त
              (क) तम्
                                (ख) क्तवा
                                                     (ग) क्तवतु
          (iv) 'न अर्घम्' इति स्थाने कि पदं प्रयुक्तम्?
                                                                        (घ) नार्घम्
                                                     (ग) अर्घाम्
               (क) अनर्घम्
                                 (ख) अर्घम्
 उत्तराणि- (I) (i) मूर्खत्वम् (ii) कण्टकम्।
          (II) अनर्घम् अवसरे दत्तम् भवति।
                                              (iii) (घ) क्त (iv) (क) अनर्घम्।
          (III) (i) (क) पापस्य (ii) (क) त्व
                                                        (ii) अनर्धम् अवसरे दत्तं वर्तते।
प्रश्निमाणम् (i) मूर्खत्वम् एव मरणं भवति।
                                                       (iv) पापं मृत्युं यावत् कष्टं ददाति।
                (iii) प्रच्छन्नं कृतं पापं पीडयति।
उत्तराणि-(i) किम् (ii) कदा (iii) कथम् (iv) किम्।

 कस्य वशे प्राणिगणः? सत्यप्रियभाषिणो विनीतस्य।

    क्व स्थातव्यम्? न्याय्ये पथि दृष्टादृष्टलाभाढ्ये ॥७॥
हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)
प्राणिगण किसके वश में हैं? सत्य-प्रिय बोलने वाले विनम्र के। कहाँ ठहरना चाहिए? इहलोक और परलोक के लाभों से भरपूर
न्याय के उचित मार्ग पर।
अन्वयं लिखत (Prose-order)
    कस्य वशे प्राणिगणः? सत्यप्रियभाषिणो विनीतस्य।
    क्व स्थातव्यम्? न्याय्ये पथि दृष्टादृष्टलाभाढ्ये ॥७॥
    कस्य वशे (i) ...... सत्यप्रियभाषिण: (ii) .....। क्व (iii) ..... दृष्टादृष्टलाभाढ्ये
    मञ्जूषा – स्थातव्यम्, प्राणिगणः, न्याय्ये, विनीतस्य
    उत्तराणि-(i) प्राणिगण: (ii) विनीतस्य
                                          (iii) स्थातव्यम्
                                                            (iv) न्याय्ये।
शब्दार्था: (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)
दृष्टादृष्टलाभाद्ये-इह लोकस्य पर लोकस्य च लाभप्राचुर्ये, इस लोक और परलोक के लाभों से भरपूर (Rich in destined
benefits)। पश्चि-मार्गे, रास्ते पर (On the way)।
संस्कृते भावार्थः (Summary)
    कस्य वशे प्राणिगणः? सत्यप्रियभाषिणो विनीतस्य।
    क्व स्थातव्यम्? न्याय्ये पथि दृष्टादृष्टलाभाद्ये ॥७॥
    अर्थात्—अस्मिन् लोक: य: जन: सत्यवादी प्रियभाषी (i) ..... च भवित तस्य वशे सर्वे प्राणिन: भविन्त। अस्माभिः
कस्य पक्षे स्थातव्यम्? इति प्रश्नस्य उत्तरम् अस्ति-दृष्ट अदृष्टलाभेन आढ्ये (ii) ...... पथि। अर्थात् अस्माभि: सदैव
इह लोकस्य (iii) .....च लाभप्राचुर्ये न्यायस्य सत्यस्य मार्गे एव स्थातव्यम् न तु (iv) .....च पथि।
    मञ्जूषा - असत्यस्य, न्यायस्य, विनीतः, परलोकस्य
    उत्तराणि – (i) विनीत: (ii) न्यायस्य
                                      (iii) परलोकस्य
                                                        (iv) असत्यस्य।
```

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi) - दृष्ट + अदृष्ट: (दीर्घ सन्धि:)।लाभाढ्ये - लाभ + आढ्ये (दीर्घ सन्धि:)। सत्यप्रियभाषिणो विनीतस्य - सत्यप्रियभाषिण: + विनीतस्य (विसर्ग सन्धि:)। प्रत्ययाः (Suffixes) प्राणी - प्राण + इन्। स्थातव्यम् – स्था + तव्यत्। भाषिण: – भाष + इन्। समासाः (Compounds) प्राणिगण: - प्राणिनाम् गण: (षष्ठी तत्पुरुष:)। न्याय्यपथि (कर्मधारयः)। न्याय्ये पथि सत्यप्रियभाषिण: - सत्यं च प्रियं च भाषते इति, तस्य (उपपद तत्पुरुष:)। दुष्टादुष्ट - दृष्ट: च अदृष्ट: च (द्वन्द्व:) प्रश्नाः (Questions) (I) एकपदेन उत्तरत-(i) श्लोके कित प्रश्ना: सन्ति? (ii) 'कुत्र' इत्यर्थे अत्र किम् पदम् प्रयुक्तम्? (II) पूर्णवाक्येन उत्तरत– क्व स्थातव्यम्? (III) भाषिककार्यम् – (i) 'स्थातव्यम्' इति पदे कः प्रत्ययः? (क) तव्य (ख) तव्यम् (ग) तव्यत् (घ) तव्य: (ii) 'पथि' इति पदे का विभक्ति:? (ग) षष्ठी (क) सप्तमी (ख) प्रथमा (घ) चतुर्थी (iii) 'न्याये पथि' इति अनयो: पदयो: विशेषणपदं किम्? (क) पथि (ख) न्याये (ग) न्याय: (घ) पथ: (iv) 'प्रियभाषिण:' इति पदे किं वचनम्? (क) द्विवचनम् (ख) बहुवचनम् (ग) एकवचनम्

उत्तराणि- (I) (i) द्वौ (ii) क्व।

(II) दृष्टादृष्टलाभाद्ये न्याय्ये पथि स्थातव्यम्।

(III) (i) (η) तव्यत् (ii) (a) सप्तमी (iii) (a) न्याये (iv) (η) एकवचनम्।

प्रश्निर्माणम् — (i) विनीतस्य वशे प्राणिगणः भवति। (ii) सत्यप्रियभाषिणः जनाः विश्वस्ताः भविति। (iii) न्याये पथि एव स्थातव्यम्। (iv) न्यायेपथः दृष्टादृष्टलाभाढ्यः वर्तते।

उत्तराणि-(i) कस्य (ii) कीदृशाः (iii) कीदृशे (iv) कः।

8. कोऽन्थः? योऽकार्यरतः, को बधिरः? यो हितानि न शृणोति। को मूकः? यः काले प्रियाणि वक्तुं न जानाति॥८॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

अन्धा कौन है? जो बुरे कार्य में लगा हुआ है। बहरा कौन है? जो हितकारी बातें नहीं सुनता। गूँगा कौन है? जो समय पर प्रिय बातें कहना नहीं जानता।

```
अन्वयं लिखत (Prose-order)
    कोऽन्थः? योऽकार्यरतः, को बधिरः? यो. हितानि न शुणोति।
    को मुक:? यः काले प्रियाणि वक्तुं न जानाति॥८॥
अन्ध: क:? य: (i) ""। बिधर: क:? य: (ii) " न शृणोति। (iii) " क:?
यः काले (iv) ..... वक्तुं न जानाति।
    मञ्जूषा - हितानि, मूक:, प्रियाणि, अकार्यरत:
                        (ii) हितानि
                                                 (iv) प्रियाणि।
    उत्तराणि-(i) अकार्यरत:
                                     (iii) मूक:
शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)
    अकार्यरत:-कुकर्मरत:, बुरे कार्य में लगा हुआ (Involved in evil deeds)। काले-समये, समय पर (On time)।
संस्कृते भावार्थः (Summary)
    कोऽन्धः? योऽकार्यरतः, को बधिरः? यो हितानि न शुणोति।
    को मूक:? यः काले प्रियाणि वक्तुं न जानाति॥॥॥
अस्य श्लोकस्य भावोऽस्ति-अस्मिन् संसारे स एव (i) ......य: उचितानुचितं जानन् अपि अकरणीयं कृत्यं
करोति। सः च बधिरः कथ्यते यः (ii) ..... वचनं न आकर्णयति। एवमेव सः मूकः कथ्यते यः
(iii) ...... सित अपि मधुरं प्रियं वा न वदति। यः जनः निन्दनीयेषु कार्येषु संलग्नः भवति सः नेत्रवान् भूत्वा अपि
 अन्थ: मन्यते। य: च हितकारीणि वचनानि कदापि न शृणोति स: कर्णयुक्त: अपि (iv) ...... एव। एवमेव य: जन:
 अवसरे प्राप्ते अपि मधुरं न वदित सः तु मूकः एव गण्यते।
    मञ्जूषा - समयप्राप्ते, अन्धः, बिधरः, हितकारि
    उत्तराणि-(i) अन्ध: (ii) हितकारि (iii) समयप्राप्ते (iv) बिधर:।
समासाः (Compounds)
                                                    अकार्य - न कार्य (नञ् तत्पुरुष:)।
     अकार्यरतः – अकार्ये रतः (सप्तमी तत्पुरुषः)।
सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)
                 को + अन्ध: (पूर्वरूप सन्धि:)।
                                                    को बधिर: - क: + बधिर: (विसर्ग सन्धि:)।
     कोऽकार्यरत: – यो + अकार्यरत: (पूर्वरूप सन्धि:)।
प्रत्ययः (Suffix)
     वक्तुम् - वच् + तुमुन्।
 प्रश्ना: (Questions)
     (I) एकपदेन उत्तरत—
         अन्धः कः?
    (II) पूर्णवाक्येन उत्तरत –
             (i) बिधर: क: भवति?
                                                         (ii) मुक: क:?
   (III) भाषिककार्यम् -
             (i) 'जानाति' इति पदे का मूलधातु:?
                                                                          (घ) ज्ञा
                                   (ख) जन्
                                                        (ग) जात्
             (ii) 'जानाति' इति क्रियाया: कर्तृपदं किम्?
                                                        (ग) प्रियाणि
                                   (ख) काले
                                                                           (घ) वक्तुं
                 (क) य:
          (iii) 'कोऽन्थः' इति पदस्य सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत।
              (क) को + अन्धः (ख) कः + अन्धः
                                                                    (घ) को + आन्धः
                                                  (ग) के + अन्थ:
          (iv) 'य:' इति पदे मूलशब्द: क:?
                                                                     (घ) यो
                                                   (ग) य:
                               (ख) यत्
              (क) य
उत्तराणि- (I) अकार्यरत:।
          (II) (i) यो हितानि न शृणोति सः बिधरः भवति। (ii) यः काले प्रियाणि वक्तुं न जानाति सः मूकः भवति।
          (III) (i) (घ) ज्ञा (ii) (क) य: (iii) (क) को + अन्ध: (iv) (ख) यत्।
                                                     (ii) बधिर: हितानि न शृणोति।
प्रश्निर्माणम् – (i) अकार्यरतः एव अन्धः भवति।
                                                     (iv) यथासमयं प्रियाणि एव वदेत्।
               (iii) मूक: प्रियाणि वक्तुं न जानाति।
                (v) य: हितानि न शृणोति स: बधिर: भवति।
                                       (iv) कदा
                                                    (v) क:1
उत्तराणि-(i) क: (ii) कानि (iii) क:
                                   पाठ्यपुस्तकस्य अभ्यासः
```

(अनुप्रयोगः)

| 1. अत्र 'क' स्तम्भे सप्त प्रश्नाः 'ख' स्तम्भे च षट् उत्तराणि | मञ्जूषायां मिश्रीकृत्य लिखितानि। यस्य प्रश्नस्य उत्तरम् |
|--|---|
| अत्र न लिखितम् तम् प्रश्नम् रेखाङ्कितं कुरुत- | |
| MY III. | त्तिण |
| (क) किमुपादेयम्? विवे | |
| (ख) किं जीवितम्? मूर्ख | 25-00 MA 432 135 135 2310 |
| (1) 44 41.00 | प्रियभाषिणो विनीतस्य |
| | वचनम् |
| (3) 14 11.12 | वद्यम् ^{भी} |
| | ु जनमैत्री |
| (छ) कस्य वशे प्राणिगणः? | |
| उत्तराणि—क्व स्थातव्यम् (न्याय्ये पथि दृष्टादृष्टलाभाढ्ये)। | वि पर्यव्याप- |
| 2. पाठम् आश्रित्य उदाहरणानुसारं समुचितपदेन रिक्तस्थान | उपादेयम् उपादेयम् |
| यथा—गुरोः वचनम् एव | 5444 |
| (क) कुकर्म एव | |
| (ख) गुरूणाम् तिरस्करणम् एव | |
| (ग) पठितम् परं न अभ्यस्तम् एव | |
| (घ) मानः एव | |
| (ङ) मूर्खत्वम् एव | |
| (च) शशिन: किरणसमा: एव | |
| (छ) अवसरे दत्तम् एव | |
| (ज) प्रच्छन्नं यत् पापं कृतं तदेव | - BOX (1507) |
| उत्तराणि—(क) हेयम् (ख) विषम् (ग) जाड्यम् (च) सञ्जनाः (छ) अनर्घम् (ज) शल्यम् | |
| 3. निम्नलिखितानाम् उत्तराणाम् समक्षम् पाठात् विचित्यः र | । इनाः लेखनीयाः— |
| यथा- | |
| सञ्जनाः एव शशिकिरणसमाः भवन्ति। के शशिकिरणसमाः | भवान्त? |
| उत्तराणि | प्रश्ना: |
| (क) ज्ञानं लब्धवा छात्रकल्याणाय सर्वदैव तत्पर: गुरु: कथ | यते। |
| (ख) यः मनसा पूतं समाचरति सः शुचिः। | |
| (ग) सत: असतश्च ज्ञाता नर: पण्डित:। | |
| (घ) गुरूणाम् तिरस्करणम् संसारे विषम्। | |
| (ङ) अस्मिन् लोके य: सत्यवादी, प्रियवादी च तस्य वशे | सर्वे जनाः। |
| (च) प्राणिनां मृढता निद्रा कथिता। | () |
| (छ) लाभप्राचुर्यम् अगणयित्वा न्यायपूर्णमार्गे एव स्थातव्यम | ú |
| (ज) त्यागी एव सर्वासाम् विपदाम् विनाशं कर्तुम् समर्थः। | |
| उत्तराणि-(क) कः गुरुः कथ्यते? (ख) कः शुचिः? | (ग) क: पण्डित:? |
| (घ) किम् विषम्? (ङ) कस्य वशे ! | |
| (छ) क्व स्थातव्यम्? (ज) सर्वव्यसनिक | |

4. अत्र ग्राह्माः गुणाः, त्याज्याः दोषाः च कोष्ठेषु लिखिताः। दोषयुक्तानि कोष्ठानि (*) इति चिह्नेन चिह्नितानि कुरुत—

| गुरुवचनम् | गुरुनिन्दा | तत्त्वज्ञता | मूढता |
|-----------|--------------|-------------|------------|
| धर्मः | विवेक: | चञ्चलता | शिष्यहितम् |
| सञ्जनता | शुद्धं मनः | कीर्ति: | संग्रह: |
| त्यागः | अनभ्यासः | अपयशः | मूर्खत्वम् |
| अभ्यासः | साधुजनमैत्री | गुप्तपापम् | अभिमानः |

| त्यागः | अनभ्यासः | अपयशः | मूर्खत्वम् |
|--|--|-----------------------------|---|
| अभ्यासः | साधुजनमैत्री | गुप्तपापम् | अभिमानः |
| | संग्रहः, अनभ्यासः, अपयशः, ोनाम् अधः पाठात् चित्वा स | मूर्खत्वम्, गुप्तपापम्, अभि | |
| | थतं जलवत् किं तरलम्? | | |
| उ०-यौवनम्, धन | म्, आयुः | उ० | |
| 4 | \$ | | |
| | 1 | | |
| उ०− | I | उ०− | |
| त्तरा णि- (ख) प्र०-क: मूक | | (ग) प्र०-अन्धः कः? | |
| (घ) प्र०-बधिर: व | ते प्रियाणि वक्तुम् न जानाति। कः? ानि न शृणोति। | उ०−य : अकार्यस्त | i:l |
| शुद्ध-विलोमपदानि मेल | | | 190 |
| (31) | (ब) | | उत्तराणि |
| (i) अकार्यम् | (क) ग्राही | (i) | कार्यम् |
| (ii) सततम् | (ख) विरोध: | | •••••• |
| (iii) विवेकी | (ग) अवद्यम् | 300,000 | *************************************** |
| (iv) जीवनम् | (घ) अविवेब | | |
| (v) अनवद्यम् | (ङ) मरणम् | (v) | |
| (vi) यौवनम् | (च) कदाचि | 00 | |
| (vii) मैत्री | (छ) कार्यम् | (vii) | |
| (viii) त्यागी | (ज) वार्द्धक्य | म् (viii) | |

| (otti) sieri | | | | |
|---|---|-------------|--|--------------|
| अधोलिखितसूक्तीनां समक्षं पाठात् | चित्वा समुचितपङिक्तं | लिखत- | | |
| यथा- | | | 272 | |
| (क) सज्जनानां स्वभावोऽयं येनेन्दुः र् | 230 T 200 C (C C C C C C C C C C C C C C C C C | | सज्जनाः शशिकिरणसमाः | |
| (ख) चलं चित्तं चलं वित्तं चले जी | | | •••••• | |
| (ग) न्याय्यात् पथ: प्रविचलन्ति पदं | न धीरा:। | | | |
| (घ) त्रैलोक्ये दीपको धर्म:। | | | | |
| (ङ) अनभ्यासे विषं विद्या। | | | | |
| (च) क: पर: प्रियवादिनाम्। | | | | |
| (छ) न विवेकं विना ज्ञानम्। | | | | |
| (ज) मन: पूतं समाचरेत्। | | | ······ | |
| उत्तराणि —(क) सज्जनाः शशिकिरणसमा | :। (ख) | नलिनीदलग | ातजलवत्तरलम् किम्? यौवनं | धनं चाय:। |
| (ग) न्याय्येपथि दृष्टादृष्टलाभाद | | धर्म: पथ्यत | The state of the s | |
| (ङ) पाठतोप्यनभ्यास: जाड्यम | 500 40 1000 1000 1000 1000 1000 1000 100 | सत्यप्रियभा | षिणो विनीतस्य वशे प्राणिगण | T:1 |
| (छ) विवेकी एव जागर्ति। | · (জ) | यस्य मानस | i शुद्धं स: शुचि:। | |
| | | | 20 C C T - 2 | |
| 8. 'त्व' प्रत्ययप्रयोगः नपुंसकलिङ्गे | भवात तल्, (ता) य | ॥गन च र | ब्रालङ्गपदान ।नमायन्ता | |
| भाववाचक- | संज्ञाशब्दनिर्माणार्थं 'त्व' | एवं तल् | (ता) प्रत्ययौ योक्तव्यौ। | |
| | त्व | | | |
| (क) यथा- | - मूर्ख+त्व | = | मूर्खत्वम् | |
| एवमेव | व (i) महत् + त | a = | | |
| | (ii) लघु + त्व | = | | |
| | (iii) पटु + त्व | = | | |
| | (iv) गुरु + त्व | - | | |
| | (v) कटु + त्व | = | | |
| | तल् | | ता | |
| (ख) यथा- | | = | लघुता | |
| | | | | |
| एवमेव | | 5 | | |
| | (ii) पशु + ता | = | | |
| | (iii) महत् + त | Π = | | |
| | (iv) गुरु + ता | = | | |
| | (v) कटु + ता | = | | |
| उत्तराणि – (क) (i) महत्त्वम् (| 9810283 XXXX |) पटुत्वम् | (iv) गुरुत्वम् | (v) कटुत्वम् |
| | 337 |) महत्ता | (iv) गुरुता | (v) कटुता। |
| 300 CSCAS200 C 70 S | 600 (VT) (Q | | N. W. W. | |
| 9. अधः 'क' भागे केचनविग्रहाः वत्त | ाः। खा भागचासमस 'खा'भागः | חיוחו חי | थाः समुचितमलन ।क्रथताम् 'ग' भागः | <u></u> |
| 'क' भागः विग्रहः | | | य मार्यः उचितं समस्तपदः | - |
| | समस्तपदम् | | | ٩ |
| यथा- 1. न कार्यम् | (क) अनर्धम् | | (i) अकार्यम् (ii) | ••• |
| 2. न अवद्यम् | (ख) अनर्थफलम् | | (66) | |
| न अध्यास: न अर्थफलम् | (ग) अनवद्यम्(घ) अकार्यम् | | (iii) (iv) | |
| ४. न अर्थम् 5. न अर्घम् | (ङ) अनभ्यास: | | (v) | |
| उत्तराणि – (i) अकार्यम् (ii) अनवद्यम् | | (iv) अन् | 25 | * |
| 20:57 (SE) \$60E (S. | योग्यता-विस | | 76 NY 250 SE | |
| | (न परीक्षाकृ | | | |
| | (ा परावापृ | | | |
| कवि-परिचयः | | | | |

उत्तराणि-(i) कार्यम् (ii) कदाचित् (iii) अविवेकी (iv) मरणम् (v) अवद्यम् (vi) वार्द्धक्यम् (vii) विरोधः

श्रीमदादिशंकराचार्यः प्रश्नोत्तररत्नमालिकायाः रचियता। 686 तमे ईसवीये वर्षे वैशाखमासे अस्य जन्म अभूत्। भारतस्य चतसृषु दिश्च मठचतुष्टयं स्थापियत्वा आचार्यः आध्यात्मकपुनरुत्थानाय, सांस्कृतिकसामञ्जस्याय, ऐक्यसंस्थापनाय च महत्त्वपूर्णं कार्यं कृतवान्। तेन सम्पूर्णदेशे वेदान्तस्य प्रचाराय भ्रमणम् कृतम्। वयसः द्वात्रिंशत्तमे वर्षे एव स समाधिना प्राणान् अत्यजत्।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)-श्रीमद् आदिशंकराचार्य इसके रचयिता हैं। सन् 686 के वैशाख मास में इनका जन्म हुआ। भारत की चारों दिशाओं में चार मठ स्थापित करके शंकराचार्य ने आध्यात्मिक पुनरुत्थान, सांस्कृतिक समन्वय तथा एकता की स्थापना के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने पूरे देश में वेदान्त के प्रचार के लिए भ्रमण किया। 32 वर्ष की आयु में ही उन्होंने समाधि अवस्था में प्राण त्याग दिए।

भावविस्तार:

विविधै: मूल्यै: युक्ता: अन्या: सूक्तय: पठ्यन्ताम्

गुरु: 1. आचार्य: प्लावयिता, सम्यग्ज्ञानं प्लव इहोच्यते।

2. दुर्लभ: स: गुरु: लोके शिष्यचिन्तापहारक:।

3. य: तारयेदविद्यां स: गुरु:।

आज्ञा गुरूणाम् हि अविचारणीया।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)-

गुरु 1. आचार्य ही सम्यक् ज्ञान करवाने वाला है।

- 2. शिष्य की चिन्ताओं को हरने वाला गुरु संसार में प्राप्त होना कठिन है।
- 3. जो अज्ञान से पार लगा दे (दूर कर दे) वहीं गुरु है।
- 4. गुरुजनों की आज्ञा का पालन तर्क किए बिना तुरन्त करना चाहिए।

धर्म: 1. आचार: परमो धर्म:।

2. एको धर्म: परं श्रेय:।

3. धर्मो रक्षति रक्षित:।

4. स्वधमें निधनं श्रेय: परधर्म: भयावह:।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)-

- धर्म 1. सदाचरण सबसे बड़ा धर्म है।
 - 2. एक धर्म पर अडिंग रहना ही कल्याणकारी है।
 - 3. धर्म की रक्षा करने पर धर्म व्यक्ति की रक्षा करता है।
 - 4. अपने धर्म का पालन करते हुए मृत्यु को स्वीकार करना भी श्रेष्ठ है, दूसरा धर्म नहीं।

साधुसङ्गः ।. साधुसङ्गः प्राणात् अपि प्रियः।

- 2. सत्सङ्गतिः कस्य न उन्नतिकारकः?
- 3. सत्सङ्गति: कथय किं न करोति पुंसाम्?

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)-

सन्जनों का साथ 1. सज्जनों का साथ प्राणों से भी प्रिय होता है।

- 2. सज्जनों की संगति किसके लिए उन्नतिकारक नहीं होती?
- 3. कहो सज्जनों की संगति मनुष्यों का क्या उपकार नहीं करती?

विनम्न: 1. विनम्न: सदा वर्धते।

- 2. स्वभावत: सर्वदा विनीत: विद्वखि: पूज्य:।
- 3. नमन्ति फलिनो वृक्षा: नमन्ति गुणिनो जना:।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)-

विनम्र 1. विनम्र व्यक्ति सदा उन्नित करता है।

- 2. स्वभाव से सदा विनम्र व्यक्ति विद्वानों द्वारा पूजनीय होता है।
- 3. फलों से भरे हुए वृक्ष झुक जाते हैं तथा गुणवान व्यक्ति नम्र होते हैं।

| चत्वारः सन्ति | 1 | 2 | 3 | 4 |
|----------------|-------------------------------|--------------------------|--------------------------|------------------------------|
| 1. वेदा: | ऋग्वेद: | सामवेद: | यजुर्वेद: | अथर्ववेद: |
| 2. आश्रमा: | ब्रह्मचर्यम् | गृहस्थाश्रम: | वानप्रस्थ: | संन्यास: |
| 3. पुरुषार्था: | धर्म: | अर्थ: | काम: | मोक्ष: |
| 4. मठा: | जगन्नाथपुर्याम् गोवर्धनमठः | द्वारिकायाम् शारदामठ: | रामेश्वरे शृङ्गेरीमठ: | बदरीनाथपर्वते ज्योतिर्मठ: |
| ५. महावाक्यानि | प्रजानं ब्रह्म | तत्त्वमसि | अहं ब्रह्मास्मि | अयमात्मा ब्रह्म |

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)-

- 1. ऋग्वेद
 2. सामवेद
 3. यजुर्वेद
 4. अथर्ववेद

 1. ब्रह्मचर्य
 2. गृहस्थ
 3. वानप्रस्थ
 4. संन्यास

 1. धर्म
 2. अर्थ
 3. काम
 4. मोक्ष

 1. जगन्नाथपुरी
 2. द्वारिका
 3. रामेश्वरम्
 4. बदरीनाथ

 5. गोवर्धन
 6. शारदामठ
 7. शृङ्गेरीमठ
 8. ज्योतिर्मठ

 1. ac 2. आश्रम 3. पुरुषार्थ 4. ਸਰ
- 8. ज्योतिर्मठ 1. प्रज्ञानं ब्रह्म (आत्मा का विशेष ज्ञान ही ब्रह्म का ज्ञान है) 5. महावाक्य
 - (वही आत्मा तुम हो)
 - 3. अहं ब्रह्मास्मि (मैं ब्रह्म हूँ)
 - 4. अयमात्मा ब्रह्म (यह आत्मा ब्रह्म है)

परीक्षोपयोगी अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तराणि

1, निम्नलिखितं पद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-कोऽनर्थफलः? मानः, का सुखदा? साधुजनमैत्री। सर्वव्यसनविनाशे को दक्षः? सर्वथा त्यागी॥

(I) एकपदेन उत्तरत-

(ii) क: अनर्थफल: भवति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(i) का सुखदा भवति?

कीदृश: जन: सर्वविपत्तीनां नाशे समर्थ: भवति?

 $\frac{1}{2} \times 2 = 1$

5

 $2 \times 1 = 2$

| (III) भाषिककार्यम्- | | | $\frac{1}{2} \times 4 = 2$ |
|--|---|--|----------------------------|
| (i) 'दु:खदा' प | दस्य विपरीतार्थकं पदं लिखत। | | |
| (क) सुखदा | | (ग) सुखदं | (घ) सुखदा: |
| (ii) अस्मिन् शलो | के 'अनर्थम्' इति पदस्य शुद्धः | अर्थः चीयताम्। | |
| (क) निरर्थव | हम् (ख) अनिष्टम् | (ग) धनहितम् | (घ) विनाशम् |
| (iii) 'मित्रता' पद | | 100 111 2000 1200-000-000 • 600-00- | |
| (क) साधुज | नमैत्री (ख) साधुजन: | (ग) मैत्री | (घ) मान: |
| | य पदं किं वर्तते? | 2 | |
| (क) सर्वथा | (ख) दक्ष: | (ग) त्यागी | (घ) मान: |
| उत्तराणि- I. (i) साधुजन | मैत्री (ii) मान:। | | |
| II. सर्वथा त्यागी | जन: सर्वविपत्तीनां नाशे समर्थ: भ | विति। | |
| III. (i) (क) स् | गुखदा (ii) (ख) अनिष्टम् | (iii) (ग) मैत्री (iv) (क | त्रविथा। |
| 2 अधोलिखितकश्चनेष रेख | ङ्कितानि पदानि आधृत्य उदाह | रणानसारम प्रश्ननिर्माणम | करुत- 1 × 5 = 5 |
| | लवत् तरलं हि <u>यौवनम्</u> । | , , , , , , | |
| | (ख) कम् | (ग) किम् | (घ) काम् |
| (ii) <u>सज्जनाः</u> शशिकिर | | 3167/6 (3) | 8 A 3 |
| | (ख) क: | (ग) का: | (ঘ) का |
| (iii) त्यागी <u>सर्वव्यसनवि</u> | | | |
| | — (ख) कुत्र | (ग) कदा | (घ) कस्मिन् |
| (iv) <u>प्राणिनां</u> मूढता निष् | | | 9 |
| | | (ग) काम् | (घ) कान् |
| (v) प्राणिनां मूढता <u>नि</u> | | Angular control of the control of th | 9901392 0.0018* |
| | - (ख) का: | (ग) के | (घ) काम् |
| | (ii) (क) के? (iii) (घ) | | |
| Cutton (b) (1) 111 (c) | (10) (11) 11 (100) (11) | ,,,,, | |
| 3. अधोलिखितपंक्तिषु स्थूत | नाक्षरपदानाम् प्रसङ्गानुसारम् शुद | द्वम् अर्थम् चिनुत- | 4 |
| I. हेयम् च किम्? अ | | | |
| (i) अश्व: | . (ii) पूर्वदिनं | (iii) | त्याज्यम् |
| II. किंच अनर्धम् ? य | दवसरे दत्तम्। | | |
| (i) न अर्धम् इति | (सम्पूर्णम्) (ii) पूजायै अघ | र्मम् (iii) | अमूल्यम् |
| III. न्याय्येपथि दृष्टादृष्ट | | | |
| (i) गाम्भीर्ये | (ii) लाभे | (iii) | लाभदायके |
| IV. कोऽनर्थफल:? मान | 1:1 | | |
| (i) मापनम् | (ii) सम्मानम् | (iii) | अभिमानम् |
| | II. (ii) अमूल्यम् III. (iii | | |
| 4. शुद्धम् अर्थमेलनं चिनुत | | ,, , 271 (100) | 1×4=4 |
| 4. राज्यम् अथमाराम । यापुरा (i) हेयम् | – (क) बहुमूल्यम् | | 104-4 |
| (ii) अनवद्यम् | (ख) त्याज्यम् | | |
| (ii) दक्ष: | (य) स्वाज्यम् (ग) अनिन्दनीयः | T | |
| (ii) ५५. (iv) अनर्घम् | (ম) জান্বনার (ম) কুशল: | 1 | |
| ASSIV. DOUBLES | | | _699 |
| | (ii) अनिन्दनीयम् (iii) | | |
| निम्नलिखितश्लोकयोः भ | गवम् उपयुक्तशब्दै: पूरयित्वा भा | वार्थं पुनः लिखतः। शब्दाना | |
| | | | $\frac{1}{2} \times 8 = 4$ |
| I. कि जीवितम? अन | | | |
| | वद्यम्, किं जाड्यम्? पाठतोऽप्यनभ | | |
| को जागर्ति? वि | विकी, का निदा? मूढता ज | न्तोः॥ | |
| को जागर्ति? वि भाव: —अनिन्हां नि | विकी, <mark>का निदा? मूढता</mark> ज ष्कलङ्कम् च जीवनम् एव वस्तुतः | न्तोः॥ जीवनं कथयितुम् शक्यते। प | |
| को जागर्ति? वि भाव: —अनिन्द्यं नि तदेव (<i>i</i>) | विकी, का निद्रा? मूढता ज ष्कलङ्कम् च जीवनम् एव वस्तुत: ········ कथ्यते यतो हि अनभ्यान | न्तोः॥ जीवनं कथयितुम् शक्यते। प प्ते विद्या विषम् भवति। स | एव नर: (ii) |
| को जागर्ति? वि भाव:—अनिन्द्यं नि तदेव (i) य: जीवने सदैव ज | ववेकी, का निदा? मूढता ज ष्कलङ्कम् च जीवनम् एव वस्तुत: '''''''कश्यते यतो हि अनभ्याः गागरूक: भवति। य: अवसरे प्राप्ते | न्तोः॥ जीवनं कथयितुम् शक्यते। प से विद्या विषम् भवति। स सावधानः भूत्वा तस्य (iii) '' | एव नर: (ii) |
| को जागर्ति? वि भाव:—अनिन्द्यं नि तदेव (i) य: जीवने सदैव ज | विकी, का निद्रा? मूढता ज ष्कलङ्कम् च जीवनम् एव वस्तुत: ········ कथ्यते यतो हि अनभ्यान | न्तोः॥ जीवनं कथयितुम् शक्यते। प से विद्या विषम् भवति। स सावधानः भूत्वा तस्य (iii) '' | एव नर: (ii) ····· |

| "कोऽन्थः? योऽव भावः—'अस्मिन् स | कार्यरतः, को बधिरः पंसारे स एव (i) | ? यो हितानि न शृ य: उचिता | णाति। '' नृचितं जानन् अपि (ii) | कृत्यं करोति |
|--|--|--|---|----------------------------|
| सः च (iii)े | कथ्यते यः | : हितकारि वचनं न (| iv) | |
| ञ्जूषा सदुपयोगं, अकरणी | यं. बधिर:, अन्ध:, मूढ | हता, जाड्यम्, विवेक | ो, शृणोति। | |
| त्तराणि – I. (i) जाड्यम् | (ii) विवेक | ì (| iii) सदुपयोगं | (iv) मूढता। |
| II. (i) अन्ध: | (ii) अकर [ा] | गीयं (| iii) बधिर: | (iv) शृणोति। |
| 6. निम्नलिखितश्लोकयाः ^१ | भावम् उपयुक्तशब्दैः । | पूरियत्वा भावार्थं पु | नः लिखत। उपयुक्तान | ां शब्दानां चयनं मञ्जूषातः |
| कर्त्तव्यम्। | GB B | | | $\frac{1}{2} \times 4 = 2$ |
| कोऽनर्थफलः? मानः, व | | मेत्री। | | |
| सर्वव्यसनविनाशे को व | | रेणाचे अवर्शकर धन | ਰਿ। ਘਰ ਮਸਤ ਪਤ (| i) कथित:। |
| साधुजनानां (iii) विपदां विनाशं कर्त्तुं समध् | सदैव सुखदानि | यनी भवति। य मानव | सर्वथा (iv) | भवति स एव सर्वासा |
| ञ्जूषा— मैत्री / मित्रता, त्य | | फल:। | | |
| त्तराणि-(i) अभिमान: | | | iii) मैत्री/मित्रता | (iv) त्यागी। |
| 7. अन्वयद्वयं पूरियत्वा पुन | | | रञ्जूषा अपि दत्ता)- | ½ × 8 = 4 |
| किं मरणम्? मूर्खत्व आमरणात्किं शल | म्, किंचानर्घम्? य त्यम्? प्रच्छन्नं यत्वृ | | | |
| ान्वयं लिखत (Pros | | | | |
| किं मरणम्? मूर्खत्वम्, वि | | | | |
| आमरणात्किं शल्यम्? | | | | |
| मरणं किम्? (i) | 3 | ानर्घंच किम्? यत् | (ii) | दत्तम्। आमरणा |
| (iii) | | | कृतम्। | |
| मञ्जूषा – शल्यं, प्रच्छ | न्नम्, मूर्खत्वम्, अवसर | <u>t</u> | | |
| उत्तराणि $-(i)$ मूर्खत्वम् | (ii) अवसरे (iii) र | ाल्यं (iv) प्रच्छन्नम् | | |
| 2. कोऽन्धः? योऽकार्यरः | तः, को बधिरः? यो रि | हेतानि न शृणोति। | | |
| | काले प्रियाणि वव | | | |
| ान्वयं लिखत (Pros | e-order) | | | |
| कोऽन्धः? योऽकार्यर | तः, को बधिरः? योहि | हेतानि न शृणोति। | | |
| को मूकः? यः | काले प्रियाणि वव | तुं न जानाति॥ | | |
| अन्धः कः? यः (i) """ | , बिधर: व | कः? यः (ii) | न शृणोति। | मूक: क:? (iii) |
| काले (iv) | | ज्ञानाति। | | |
| मञ्जूषा हितानि, प्रिया | णि, अकार्यरत:, य:। | | | |
| उत्तराणि—(i) अकार्यरत: | (ii) हितानि (iii) | य: (iv) प्रियाणि। | | |
| 8. अधोलिखितानां पदानां | विपर्ययचयनं कृत्वा | लिखत– | | |
| पदानि | | f | त्रपर्ययाः | |
| (1) हेयम् | | (क) स | म्मानम् | |
| (2) गुरु: | | (ख) व | लङ्कयुक्तम् | |
| (3) सततम् | | (শ) য় | 100 M | |
| (4) अवधीरणा | | (ঘ) বি | | |
| (5) अनवद्यम् | | (জ) চ | | |
| (6) मूढता | | (च) पु | | |
| (7) सज्जना: | | (ন্তু) ব | | |
| (8) मैत्री | | (জ) বি | | |
| (9) शल्यम् | | (झ) व | C. Marie Carrieran. | |
| (10) श्रोता | | (স) বু | | |
| त्तराणि-(।) ग्राह्यम् | (2) शिष्य: | (3) कदाचित् | (४) सम्मानम् | (5) कलङ्कयुक्तग |
| 2019년 전 1018년 | (७) दुर्जनाः | (8) विरोध: | (१) पुष्पम् | (10) वक्ता। |
| (6) विद्वता | | | | |
| HEREIGENE | मूल्य | परक प्रश्नाः (V | BQs) | |
| (6) विद्वता | | | (BQs) | |
| | ि रितान् प्रश्नाम् उत्तरत | - - | | त्र: कथित:? |
| (6) विद्वता गाक्यानि पठित्वा वाक्याधा १इनाः (i)'को गुरुः? अधि (ii)'किं विषम्? अव | रितान् प्रश्नाम् उत्तरत गततत्त्वः शिष्यहितायोद्य त्रधीरणा गुरुषु।' गुरुणाम् | !— तः सततम्।' इति १९ (अपमानं छात्रेभ्यः नि | गोकांशे क: अधिगततत्त्व कं भवति? | त्र: कथित:? |
| (6) विद्वता गाक्यानि पठित्वा वाक्याधा इनाः (i)'को गुरुः? अधि (ii)'किं विषम्? अव (iii)'का निद्रा? मृद्दत | रितान् प्रश्नाम् उत्तरत गततत्त्वः शिष्यहितायोद्य वधीरणा गुरुषु।' गुरुणाम् ॥ जन्तोः।' इति वाक्ये | — तः सततम्।' इति १० (अपमानं छात्रेभ्यः ि निद्रा केषां मूर्खता अ | गोकांशे क: अधिगततत्त्व कं भवति? स्ति? | |
| (6) विद्वता गाक्यानि पठित्वा वाक्याधा श्नाः (i) 'को गुरुः? अधि (ii) 'कि विषम्? अव (iii) 'का निद्रा? मूढत (iv) 'प्रच्छन्नं कृतं पा | रितान् प्रश्नाम् उत्तरत गततत्त्वः शिष्यहितायोद्य वधीरणा गुरुषु।' गुरुणाम् ॥ जन्तोः।' इति वाक्ये | !– त: सततम्।' इति श्ल [अपमानं छात्रेध्य: ि निद्रा केषां मूर्खता अ शल्यम्।' अत्र जीवाः | गोकांशे क: अधिगततत्त् कं भवति? स्ति? तम् आजीवनं शल्यं वि | |